राजस्थानी ख्यालों का वर्गीकरण

लोक-ख्याल विधा को लेकर तो विद्वानों ने कोई वर्गीकरण नहीं किया है पर सम्पूर्ण लोक-नाट्य विधा के दृष्टिकोण से कई विद्वानों ने वर्गीकरण किया है।

हमारे विचार से राजस्थानी लोक-ख्यालों का विषयानुसार वर्गीकरण होना चाहिए। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में रहने वाले ख्यालकारों ने एक ही कथा को लेकर विभिन्न रंगतों या तर्जों में ख्याल-रचना की। एक ही कथा पर आधृत दो या दो से अधिक ख्यालों में कथानक की दृष्टि से कोई विशेष भेद नहीं है। तर्ज और रंगत ही उनके भेदक तत्त्व है, जिनके पीछे क्षेत्रीयता का महत्त्व बढ़ गया। यदि तर्ज को रंगत के आधार पर वर्गीकरण किया जाए तो एक ही कथानक को लेकर चलने वाला ख्याल दो विभिन्न वगों में रखा जायेगा। अपने मूल रूप में समानता रखने वाले ख्यालों को रंगत के आधार पर दो वगों में रखना कहाँ तक उपयुक्त है? कुछ समझ में नहीं आता। इसके अतिरिक्त रावळों की 'रम्मत' लोक-नाट्य तो अवश्य है पर लोक-ख्याल तो नहीं है, क्योंकि 'रम्मत' की भाषा और ख्याल की भाषा में रात-दिन का अन्तर है। 'रम्मत' के स्वांगों के कथानक में और ख्याल के कथानक के विधान में भी भेद है। 'रम्मत' में स्वांग लाने वाला अपनी ओर से भी वर्ण्य-विषय में कुछ जोड़ सकता है जबकि ख्याल करने वाले पात्र को इतनी स्वतन्त्रता नहीं है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

'रम्मत' के स्वांगों के पात्र वर्ग-विशेष के चरित्र के परिचायक होते हैं, पर ख्यालों के पात्र व्यक्ति-विशेष के चरित्र पर आधारित होते हैं।

राजस्थानी लोक-ख्यालों को वर्ण्य-विषय के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) पौराणिक ख्याल,
(2) वीरता-प्रधान ख्याल,
(3) प्रेम-प्रधान ख्याल।

(1) पौराणिक ख्याल- भारतीय संस्कृति के उन्नायक चरित्रों को लेकर कई ख्याल रचे गये हैं। ये चरित्र परमार्थ हेतु अपना र्स्वस्व त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इन ख्यालों में से कई ख्यालों की कथा का सम्बन्ध ईश्वर की लीलाओं से भी है। यथा- अलीबख्श कृत 'कृष्ण-लीला'। इन ख्यालों में ईश्वर, जगत, आत्मा और सृष्टि के विधान के सम्बन्ध में भी विचार अभिव्यक्त किये गये हैं। धर्म की बात को इन ख्यालों में सर्वोपरि ठहराया गया है। दया, सेवा, परहित कामना आदि मानवीय गुणों की इनमें प्रशंसा की गयी है। 'कृष्ण-लीला' में ही 'पाप तेरे मन में छाया, धरम हिरदै से बिसराया' कहकर दुर्मति कंस को शिक्षा दी गयी है। इन ख्यालों में श्रीकृष्ण के जीवन की सभी प्रमुख घटनाओं का वर्णन मिल जाता है।

इस प्रकार के ख्यालों में वचन-निर्वाह की बात विशेष रूप से वर्णित रहती है। हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को वचन दे दिया और राज्य छोड़कर चला गया। स्वयं भी दुखी हुआ, अपनी रानी एवं पुत्र को भी दुख दिया पर वचनहार नहीं हुआ। राजा चन्द से भी कोढ़ी साधु के रूप में भगवान ने पहले वचन देने की बात कही है-

'पहली वचन दे हाथ का मुझ को पड़े बेरा।
ये ल्यो वचन महाराज गंगा बीच में दई।'

ठीक यही हालत मोरध्वज राजा के ख्याल में है। पहले वचनबद्ध करके कुँवर को सिंह के खाने हेतु माँगा जाता है।

इन ख्यालों में पातिव्रत्य-धर्म की उत्कृष्टता को सिद्ध किया गया है। पत्नी के लिए पति से बढ़कर इस संसार में है ही क्या। रावण का पुत्र इन्द्रजीत युद्ध में मारा गया। सतीत्व को श्रेष्ठ समझने वाली सुलोचना राम-दल में निस्संकोच भाव से पहुँचती है और अपने प्रिय का शव लेकर सती हो जाती है। पातिव्रत्य-धर्म को पालने वाली स्त्रियाँ पति-वाक्य को ब्रह्म-वाक्य समझती हैं। वे और सब कुछ अपने सतीत्व के बल पर कर सकती है पर पति का कहना टालना उनके वश की बात नहीं है। तभी तो तारामती रानी हरिश्चन्द्र के साथ और मलयागिर रानी चन्द के साथ 'राज-पाट' छोड़कर चली गयी थीं। पति के साथ रहना उनके लिए स्वर्ग से भी अधिक सुखदायक था। राजा मोरध्वज की रानी ने भी पति के कहने से ही अपने कलेजे के टुकड़े इकलौते पुत्र पर करवत चलाई। भर्तृहरि एवं पिंगला की कथा कुछ भी रही हो पर राजस्थानी ख्याल में चित्रित पिंगला भी पातिव्रत्य का

पालन करने वाली है। मन्त्री के मुख से ज्योंही वह यह सुनती है कि सिंह के घात से महाराज भर्तृहरि का प्राणांत हो गया, त्योंही उसके प्राण-पखेरू भी उड़ जाते हैं।

पौराणिक ख्यालों में करुणाजनक दृश्यों की अवतारणा विशेष रूप से हुई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इन करुण-चित्रों को देखने से द्रष्टा के मन में इन आदर्श पात्रों के प्रति आदर का भाव जाग्रत होता है। उनको विकट परिस्थितियों का सहर्ष सामना करते देखकर हमारे मन में भी साहस का संचार होता है। ऐसे चित्रों को उभारकर नागरिकों में कर्त्तव्य-बोध की भावना भरी गयी है। तारामती मृत राजकुमार को लेकर जाती है। वह मर्मान्तक रुदन-क्रन्दन करती है पर कर्त्तव्य-निष्ठ नृप हरिश्चन्द्र 'लाग' लिये बिना दाह संस्कार नहीं करने देते। तारामती की कारुणिक स्थिति इन शब्दों में दृष्टव्य है-

'आज म्हारी नाव समंद बिच अटकी कुण पार लगावै।
हरीचन्द राजा की आप तारादे रानी पिसतावे
कुण सुणे किसकूं मेरो अन्दर सूं जिगर जलजावे
रोहितास लाल तेरी देखकर ल्हास हियो उजळ्यो जावे
माता कूं खड़ी देख लाल तूं एक बेर भी नहीं मुसकावे
तेरी जननी पापण घुम्मा-मुक्का छाती पर बैठी खावे।'[1]

इसी प्रकार पूरनमल को फाँसी हो जाने पर उसकी माता भी विलाप करती है। पूरनमल की स्मृति रह-रहकर उसके कलेजे पर आघात करती है। जिस पलंग पर पूनम सोया करता था वहीं पलंग आज माता के हृदय को तीक्ष्ण शर की भाँति सालता है। आँसू हृदय की 'पाज' को फोड़कर बाहर आ ही जाते हैं। उनकी स्थिति पंख रहित पक्षी की तरह, 'चन्द्रविहूनी रजनी वत्' पत्र रहित द्रुम की भाँति और बिना पानी की नदी के समान हो गयी है। उसकी यथार्थ स्थिति का चित्रण उसी के शब्दों में-

'महल आवे दौड़ खाबा सेज शोमल सारसी
घन लगे मोय धूल ज्यूं विज्जन रसोई गार सी
लाड़ला बिन जगत में अब कौन पार उतारसी
आज सुत बिन मैं लगूं ज्यूं अंधेरी आवसी।'[2]

'चन्द-मलयागिर' के ख्याल में भी सायर-नीर से विलग हो जाने पर उनकी माता की स्थिति भी ऐसी ही होती है। श्रवण के मरणोपरान्त उसके माता-पिता की स्थिति और भी अधिक चिन्ताजनक हो जाती है। उनके मुख से निकला यह वाक्यांश (बुढ़ापो आछो बिगाड्यो श्रवण राजकुमार तू) ही उनकी सही मनोव्यथा को प्रकट करने वाला है। राजा मोरध्वज की रानी को भी लगता है कि कुँवर की स्मृति आते ही उनका हृदय भर जाता है, तभी तो वह राजा मोरध्वज से कहती है 'कँवर चित आवतां ही पिवजी भर-भर हिवड़ो जाय।' भर्तृहरि के वैराग्य धारण कर लेने पर पिंगला की स्थिति भी बड़ी करुणाजनक हो

1. हरीचन्द-तारामती का ख्याल
2. पूरनमल का ख्याल।

जाती है। इस प्रकार हम पाते हैं कि पौराणिक ख्यालों में करुण रस की अजस्र धारा प्रवाहित हुई है।

इन ख्यालों के नायकों को कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है पर अन्ततः उनकी विजय प्रदर्शित की गयी है। भारतीयों की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना आवश्यक भी था। आग में तपने से ही तो सोने का रंग और अधिक निखरता है। हरिश्चन्द्र एवं राजा चन्द को राज्य त्याग कर कठिन परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ी तो मोरध्वज को अपने आत्मज पर करवत चलाकर। भर्तृहरि के समक्ष कठोर परीक्षा थी, पिंगला रानी को माता कहकर उससे भिक्षा प्राप्त करनी। ईश्वर स्वयं ही कठोर परीक्षाएं लेने वाले परीक्षक हैं। चन्द्र-मलयागिर के ख्याल में एक स्थान पर कृष्ण भगवान स्वयं कहते हैं-

'प्रथम सत्यवादी हरिचन्द्र का देख्या बनकर विश्वामित्र
बावन रूप धर्‌या बली कारण मांगी भौम अनन्त
मोरध्वज के द्वार सिंह पर बैठ चले बण सन्त।'[1]

आदर्शवाद की स्थापना पौराणिक ख्यालों की आधारशिला है। अपने चरित्र को एक आदर्श चरित्र बनाने की दृष्टि से इन ख्यालों के नायक-नायिकाएँ बड़े-से-बड़ा त्याग करते हैं। हमें जो हानि हो चुकी है, उसकी क्षति-पूर्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाने से कदापि नहीं हो सकती, फिर किसी को कष्ट क्यों दिया जाए? इसी विचार का ध्यान करके सुलोचना रावण को उत्तर देती है-

'ला दो सभी दुनिया के चाहे कोई सिर उतार करके
मैं तो विधवा से अब तो नहीं सकती सुहागन महाराज कभी होने की मार करके।'

ईश्वर की शक्ति में अटल विश्वास रखने वाला पूरनमल भी अपने आदर्शों के लिए अपनी जान गँवा बैठता है-

'ईक प्यारी ईश्वर री राखां पर...पर... नहिं ताकां।।'

इन आदर्शवादियों के लिए सांसारिक माया-मोह कुछ भी महत्त्व नहीं रखते। ईश्वर में इनका मन पूर्णतः अनुरक्त होता है। इसी बात का विचार करके राजा मोरध्वज अपनी रानी से कहता है कि ईश्वर से प्रेम करो। यही सार की बात है।

'मोह माया ने छोड़के हे राणी, कर भगवत से प्रीत।
पुत्र नहीं अब आयगा हे रांणी कौल गिया है बीत।।'

राजस्थान के पौराणिक ख्यालों में हमें प्रायः सगुणोपासना के ही वर्णन मिलते हैं। राजा गोपीचन्द के ख्याल और भर्तृहरि के ख्याल में निर्गुण-निराकार ईश्वर के सम्बन्ध में भी कुछ चर्चा हुई है। इन ख्यालों में हठयोगिक क्रियाओं के चित्र भी मिल जाते हैं। एक ऐसा ही वर्णन यहा उद्धृत है-

1. चन्दमलयागिर का ख्याल।

'त्रिकोण आसन पर पद्मासन मन रोको भीतर काया।
एक चित्त से ध्यान लगाओ, छोड़ राज की मोहमाया।
रोको दशौ द्वार श्वासां को ब्रह्माण्ड में ले जावो।
एक चित्त से ध्यान लगावो, परम पदारथ पल में पावे।।'[1]

निष्कर्षत कहा जासकता है कि पौराणिक ख्यालों में प्रसिद्ध चरित्रों का आदर्शवादी जीवन अभिव्यंजित है, भारत की धर्म-भावना वर्णित है, सर्वस्व त्याग की बलवती अभिलाषा उल्लिखित है, अन्याय एवं अधर्मी का विरोध करने के लिए कहा गया है।

(2) वीरता-प्रधान ख्याल- महाकवि सूर्यमल मिश्रण के मानस से निःसृत ये शब्द 'पूत सिखावे पालणे मरण बड़ाई माय' राजस्थान की प्रत्येक माता और प्रत्येक पुत्र पर लागू होते हैं। यहाँ के लोग वीरों के अद्‌भुत कृत्यों का श्रवण करते-करते थकते ही नहीं। इन ख्यालों में वर्णित वीर प्रजा-रक्षक एवं लोक-हितैषी व्यक्ति होता है। उनका जन्म दुष्टों के दलन के लिए ही हुआ है। राठौड़ पाबू जिन्दराव को सबक सिखाने के लिए ही जन्मा था तो तेजा भी अपने प्राणों को हथेली पर रखकर गूजरी लाछां की गायों को छुड़ाने के लिए डाकू-दल से जा भिड़ता है। ये नरपुंगव अन्याय सहन नहीं कर सकते। सलावतखाँ अमरसिंह के विरूद्ध षड्यंत्र करने की ताक में था पर अमरसिंह इस बात से पूर्णतः अनभिज्ञ था, अतः वह कहता हैं-

'सलावतियो करे ढेचरी दिन में सौ-सौ बार।
धके पड़े हमारे स रे डालूं जीव सूं मार।।'

ऐसे वीर किसी से भी नहीं डरते। अमरसिंह को बिलकुल भी चिन्ता नहीं है कि सलावतखाँ बादशाह का साला है और बादशाह के यहाँ लाखों की संख्या में सैनिक हैं। विजयश्री भी ऐसे वीरों का ही वरण करती है। उनके पैर 'धरने' से धरती भी 'धूजने' लगती है। इन वीरों का अद्वितीय शौर्य निम्नलिखित पंक्तियों में देखते ही बनता है-

'खांडे मारे तेज है स जी सदा पागड़ै जीत
मोड़ां मुवाणी फौज की स म्हे कैद न छोडां रीत
धरती धूजे पग धर्‌यां स रे खांडे आग झड़न्त
मदमाता गज घूमता स रे ज्यांरा तुरत उखाड़ा दंत।
चिमटी सूं चूरा करां सी जी रूपयां रा सब अंक।
केहरि मारां कांकरी स कोई सामां पगां निसंक।।'

पाबूजी, गोगाजी तेजाजी आदि सभी वीर ऐसे ही पराक्रमशाली हैं। इन सभी वीरों में परोपकार की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।

वीरता-प्रधान ख्यालों में युद्ध-भूमि, शस्त्रास्त्रों एवं युद्धों की भयानकता भी चित्रित है। युद्ध-भूमि का यह हाल है कि लाश-पर-लाश पड़ी है। चारों ओर रुंड और मुंड बिसरे पड़े हैं। रण-भेरी का तूर्य-नाद और नगाड़ों की ध्वनि वीरों में उत्साह का संचार करती है।

1. गोपीचन्द का ख्याल

Scanned by CamScanner

युद्ध के निम्नलिखित वर्णन को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम स्वयं युद्ध - स्थल पर उपस्थित हैं-

'बजे तलवार खटाखट, गिर खोपड़ियां कटाकट
वीर निकले बच झटपट, मरे कितने ही चटपट
मची लड़ाई विकट भयंकर, नदी खून की चाली
जोगणियां खप्पर ले आई, नाच करे कंकाळी।'
'पड़ी नगारां ठोर मच्या दल सोर
इकट्ठा हो'र कटक कर चाला
कर हनुमान ज्यूं हाक लंक पर डाक पड़ा छिन मांही
ज्यूं ब्रज पर कर्‌यो चढ़ाव इन्द्र की नांई
केई लिया खंग कुरसांण धनुष करतांण बाण फटकारै
केई तबल तेग त्रिसूल वज्र के मारे
केई गुप्ती गुर्ज चलावै केई छुरी कटारां बावै
केई ले ले चक्र चढ़ावे केई जादू सा अजमावै।'

युद्ध-वर्णन की भाँति ही अमरसिंह की कटार और कटार चलाने का नैपुण्य इन पंक्तियों में दृष्टव्य हैं-

'... रगत चले ज्यूं नीर तिरे ज्यूं माछली
हताळियां पळका करे मूठ चली भल खाय
दुसमण देखे दूर सूं दौड़ सामने जाय
आभे चमके बीज फोड़ पताळ में
कट कै मिस री काळका अदिळ भंजणहार
नागण ज्यों नखरो करे बिछवणस डंक कटार।'

वीरता-प्रधान ख्यालों में नायकों का अन्त भी बहुत विचित्र ढंग से दर्शाया गया है। कहीं तो उनको खपाने का उत्तरदायित्व दैविक शक्तियाँ अपने पर लेती है, जैसा कि बगड़ावतों के ख्याल में वर्णित है। चामुण्डा देवी ने बगड़ावतों को खपाने का बीड़ा उठाया था। प्रणवीर तेजा की इहलौकिक लीला सर्प-दंशन से समाप्त होती है। गोगा को पृथ्वी माता अपनी गोद में छिपा लेती है। पाबू के सम्बन्ध में मान्यता है कि खींचियों के साथ लड़ता-लड़ता कालमी घोड़ी का असवार व्योम मंडल में जा पहुँचा, सो अभी तक लौटकर नहीं आया। कई बार तो इन नायकों को धोखे में डालकर मारा जाता है। अर्जुन गौड़ ने अमरसिंह को इसी प्रकार मारा था। डाकुओं के अन्त का प्रमुख कारण धोखा ही है। इन ख्यालों में चुगलखोर भी मिल जाते हैं। इन ख्यालों में तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित पंक्तियाँ पर्याप्त महत्त्व रखती हैं-

'रोज कचेरी भरे बादशा करे अदल का न्याव
चुगलखोर चुगली करेस और दुसमण खेले दाव।।'[1]

डाकुओं के जीवन-चरित को लेकर भी अनेक वीरता-प्रधान ख्यालों का प्रणयन किया गया। सामाजिक असन्तोष के कारण, पारिवारिक मन-मुटावों के कारण या आर्थिक विषमताओं से संत्रस्त होकर कई लोग डाकू बन जाते हैं। इनके जीवन में भी उच्च कोटि के आदर्श होते हैं। ये लोग धनिक वर्ग से लूट-लूटकर धन इकट्ठा करते हैं और उस सारे धन को गरीबों-अपाहिजों आदि में बाँट देते हैं। इन लोगों को यदि दान-वीर कह दिया जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। इनका रण-कौशल भी प्रशंस्य है। अन्य पात्र इनके समान प्रत्युत्पन्नमति वाले नही होते हैं। ये तो स्पष्ट घोषणा करते हैं कि अपने शीश की बलि दिये बिना दूसरों के धन को हड़पकर नहीं खाया जाता। एक डाकू में कौन-कौन से गुण हुआ करते थे, इसका विवेचन निम्न पंक्तियों में सुन्दर ढंग से किया गया है-

'धन धाड़ी रो लिख्यो करम में लूट लूट कर खावां
झूठा वचन कबूयन बोलां सांचा हरि को प्यारा
विसवास दगौ कर मारे जिसका नरक जमारा
.... मोहब्बत का सांचा काम पड़ै नहिं न्यारा
मुलक-मुलक की दौलत लियावां जिसमें करां गुजारा
पर धन खाणा जगत में स है सिर साटे का माल
घोड़ों पर घरबार कहीजै बादस्या के नहीं सारे।'[2]

युद्ध से मुँह मोड़कर चले जाने की बात भले आदमी के हृदय में जँचती ही नहीं। तभी तो बलजी भूरजी धाड़वी कहते हैं-

'भाग्यां लागे सूरापन के दाग।'

वीरता-प्रधान ख्यालों में हिम्मत को सर्वोपरि बताया गया है। हिम्मत के बिना मानव के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। हिम्मत ही उसे सांसारिक संघर्षों से जूझने का बल प्रदान करती है। बलजी भूरजी के ख्याल में हिम्मत के सम्बन्ध में इस प्रकार भावाभिव्यक्ति की गयी है-

'हिम्मत बड़ी बलवान नर हीमत को जग में मोल जी
हीमत से ही कीमत बढ़ै; हीमत बड़ी अणतोल जी
हार हीमत मर्द की पल मांय निकसे पोल जी
ना होय कछु हीमत बिना ये सायरूं का कोल जी।'[3]

वीरता-प्रधान ख्यालों के माध्यम से मुख्यत: राजस्थान के नर-रत्नों के उज्ज्वल चरित्र को प्रकाशित किया गया है। पर इन ख्यालों में चाटुकारों का कहीं-कहीं उल्लेख

1. अमरसिंह का ख्याल।
2. दयाराम धाड़वी का ख्याल।
3. बलजी-भूरजी धाड़वी का ख्याल।

Scanned by CamScanner

मिल जाता है। ये चाटुकार सर्वत्र वीर-पुरुष के मार्ग में बाधक के रूप में उपस्थित होते है। इन चापलूसों पर यह उक्ति 'मुख ऊपर मिठियास घट मांही खोटा घड़ै' पूर्णरूपेण चरितार्थ होती है। दयाराम धाड़वी को चंगुल में फँसाने के लिए जाफर को उसका मित्र बनना पड़ा और अपने लड़के के विवाह में चलने का झूठा बहाना बनाना पड़ा। शुद्ध-हदय दयाराम इस षड्यंत्र को कैसे जान सकते थे।

इन ख्यालों में वीरों की कथाएँ वर्णित हैं। इसके द्वारा आदर्शमय वीर-चरित्र उभरकर हमारे सामने आता है। इनके पढ़ने य देखने से समाज हित एवं देश प्रेम की भावना जाग्रत होती है।

Scanned by CamScanner